MAKTABATUL MADINA INDIA

Najaat Dilane Waali Baten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 482
Weekly Booklet : 482

(इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की किताब मिन्हाजुल आ़बिदीन से तीसरी क़िस्त़)

नजात दिलाने वाली बातें

(सफ़हातः 17)

तवक्कुल पैदा करने का त़रीक़ा 02
ख़ुद पसन्दी का इ़लाज 05
नेमत को बाक़ी रखने का त़रीक़ा 12
क़ाबिले रश्क कौन ? 17

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नजात दिलाने वाली बातें

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "नजात दिलाने वाली बातें" पढ़ या सुन ले उसे इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े अपनी इस्लाह़ की तौफ़ीक़ नसीब कर और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़ता फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिए नूर होगा। (فردوس الاخبار، 422/1، حدیث:3149)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ अल्लाह पाक को "साबिर" कहना कैसा ?

अल्लाह पाक के लिए लफ़्ज़ "साबिर" इस माना में बोला जाता है कि उस ने मुजरिमों से अ़ज़ाब को रोका हुवा है और वोह अ़ज़ाब देने में जल्दी नहीं फ़रमाता। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 123)

﴾2﴿ है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो !

जब तुम से कोई चीज़ फ़ौत (यानी ज़ाएअ़) हो जाए तो कोशिश करो कि दूसरी (यानी सब्र) फ़ौत न हो। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 134)

﴾3﴿ रबूबिय्यत और उ़बूदिय्यत के माना

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा गया : उ़बूदिय्यत (यानी बन्दा होना) क्या है और रबूबिय्यत (यानी रब होना) क्या है ? उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : रब होना

येह है कि अल्लाह पाक जो चाहे हुक्म फ़रमाए और बन्दा होना येह है कि उस के हर हुक्म पर राज़ी रहे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 133)

﴾4﴿ तवक्कुल पैदा करने का त़रीक़ा

अल्लाह पाक जब किसी वक़्त तुम से दुनिया या रिज़्क़ को रोक दे तो तुम कहो : ऐ नफ़्स ! अल्लाह पाक तेरे ह़ाल को तुझ से ज़ियादा जानता है और वोह तुझ पर सब से ज़ियादा मेहरबान भी है, जब वोह कुत्ते बल्कि ग़ैर मुस्लिम को अपना दुश्मन होने के बावुजूद रोज़ी देता है, मैं तो उस का बन्दा, उसे पहचानने और एक मानने वाला हूं, क्या वोह मुझे एक रोटी भी नहीं दे सकता ? ऐ नफ़्स ! अच्छी त़रह़ जान ले कि उस ने किसी बड़े फ़ायदे के लिए ही तुझ से रिज़्क़ रोका है और अ़न्क़रीब अल्लाह पाक तंगी के बाद आसानी फ़रमाएगा पस थोड़ा सब्र कर ले। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 138)

﴾5﴿ मुसीबत पर सब्र

ऐ ग़मों में क़ैद शख़्स ! (मुतवज्जेह हो) जब तुझे ज़ियादा तंगी हो तो सूरए अलम नश्रह़ में ग़ौर कर, तू देखेगा कि एक तंगी का ज़िक्र दो आसानियों के दरमियान है जब तू उसे बार बार पढ़ेगा तो ख़ुश हो जाएगा। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 137)

﴾6﴿ नफ़्स को गुनाहों से रोकने का त़रीक़ा

नफ़्स बहुत ज़ियादा बुराई का हुक्म देता, बुराई की त़रफ़ माइल होता और फ़ित्नों का शौक़ रखता है, इसे बहुत ज़ियादा डरा धमका कर ही उन (गुनाहों भरी) बातों से रोका जा सकता है, फ़ित़री त़ौर पर येह ऐसा आज़ाद है जिस में ह़या है न वफ़ा। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 139)

﴾7﴿ सच्चा शौक़

ग़म : खाने से रोकता है। ख़ौफ़ : गुनाहों से रोकता है। उम्मीद : इ़बादात

की हिम्मत पैदा करती है और मौत की याद : ग़ैर ज़रूरी शै से बे रग़बत करती है। जो अपने मत़लूब व मक़्सूद को पहचान लेता है उस के लिए कोशिश करना आसान हो जाता है, जिसे कोई शै पसन्द आ जाए और उसे पाने का भरपूर शौक़ उभरने लगे तो बन्दा उस के लिए हर मशक़्क़त बरदाश्त करता है और किसी तक्लीफ़ की कोई परवा नहीं करता। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 140)

﴾8﴿ जन्नती शख़्स के औसाफ़

मुसीबत व तंग ह़ाली बरदाश्त करना उसे नुक़्सान नहीं देता जिस का ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस हो। तुम उसे (यानी जिस का ठिकाना जन्नत है) ग़म में डूबा, ख़ौफ़ज़दा, घबराया हुवा और पुराने कपड़ों में मस्जिदों की त़रफ़ जाता देखोगे। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 141)

﴾9﴿ जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ौफ़े ख़ुदा

मरवी है कि सादिक़ो अमीन आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को (अल्लाह पाक के छुपे फ़ैसले के ख़ौफ़ से) काबए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर गिर्या व ज़ारी करते और येह दुआ़ करते देखा कि "**इलाही ! मेरा नाम न बदलना और मेरे जिस्म को तब्दील न फ़रमाना।**" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 146)

﴾10﴿ ग़म तीन त़रह़ के हैं

बाज़ बुज़ुर्गों رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم ने फ़रमाया ग़म तीन त़रह़ के हैं : ﴾1﴿ त़ाअ़त और नेकी का ग़म कि शायद वोह क़बूल न हो। ﴾2﴿ गुनाह और मासियत का ग़म कि शायद बख़्शे न जाएं ﴾3﴿ मारिफ़ते इलाही (यानी अल्लाह पाक की पहचान) का ग़म कि वोह किसी वक़्त छिन न जाए। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 155)

﴾11﴿ कब ख़ौफ़ और कब रजा (यानी उम्मीद) होनी चाहिए ?

अगर तुम पूछो कि क्या किसी मख़्सूस ह़ालत में ख़ौफ़ और उम्मीद में से किसी एक को तरजीह़ हो सकती है ? तो जान लो कि अगर बन्दा सेह़त व तन्दुरुस्ती की ह़ालत में हो तो "**ख़ौफ़**" ज़ियादा बेहतर है और बीमारी व कमज़ोरी की ह़ालत में "**उम्मीद**" बेहतर है, ख़ास त़ौर पर जब सफ़रे आख़िरत पर रवानगी (यानी मौत) का वक़्त हो तो रह़मते इलाही से उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिए। मैं ने (यानी इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) उ़लमाए किराम से ऐसा ही सुना है। वजह येह है कि ह़दीसे क़ुदसी में अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : "मैं उन लोगों के पास होता हूं जिन के दिल मेरे ख़ौफ़ से टूट चुके हैं।"

(حلیۃ الاولیاء، 4/34، قول نمبر:4664) (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 156)

﴾12﴿ अल्लाह पाक से हुस्ने ज़न

अल्लाह पाक से हुस्ने ज़न (यानी अच्छे गुमान) का मत़लब येह है कि उस की नाफ़रमानी से बचा जाए, उस के अ़ज़ाब से डरा जाए और उस की इ़बादत में ख़ूब कोशिश की जाए। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 156)

﴾13﴿ जैसी उम्मीद वैसा अ़मल

तुम नजात की उम्मीद रखते हो मगर उस के रास्तों पर नहीं चलते, सुनो ! कश्ती ख़ुश्की पर नहीं चल सकती। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 157)

﴾14﴿ झूटी आरज़ू, धोका और ग़फ़लत

इ़बादत में मेह़नत व कोशिश के बग़ैर हुस्ने ज़न नहीं बल्कि झूटी आरज़ू और धोका व ग़फ़लत है। इस बुनियादी बात से इ़ब्रत पकड़ो, नेकों के ह़ालात पर ग़ौर करो और ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाओ और तौफ़ीक़ देने वाला तो अल्लाह पाक ही है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 157)

﴾15﴿ बख़ील व रियाकार पर जन्नत ह़राम

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत ने गुफ़्तगू की और कहा : **"मैं हर बख़ील और रियाकार पर ह़राम हूं।"**

(تاریخ ابن عساکر، 52/151، حدیث:6133) (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 160)

﴾16﴿ सूरए वाक़िआ़ की बरकात

रिज़्क़ के मुआ़मले में सख़्ती और तंगदस्ती के वक़्त सूरए वाक़िआ़ पढ़ने के मुतआ़ल्लिक़ हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से अह़ादीस व वाक़िआ़त मरवी हैं, ह़त्ता कि ब वक़्ते विसाल जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه को इस बात पर मलामत की गई कि आप ने अपनी औलाद के लिए कोई माल नहीं छोड़ा तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : मैं उन के लिए सूरए वाक़िआ़ छोड़े जा रहा हूं। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 165)

﴾17﴿ सूरए वाक़िआ़ क़नाआ़त पैदा करती है

अक्सर औक़ात तुम सूरए वाक़िआ़ पढ़ने के बाद दिल में क़नाआ़त मह़सूस करोगे और कमज़ोरी और ज़ियादा खाने की ह़िर्स को भी ख़त्म पाओगे नीज़ तुम्हें अपने अन्दर खाने पीने से बे नियाज़ी भी मह़सूस होगी, जिस ने इस का तजरिबा किया वोह इन बातों को अच्छी त़रह़ जानता है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 166)

﴾18﴿ ख़ुद पसन्दी का इ़लाज

ख़ुदपसन्दी की ह़क़ीक़त अपने नेक अ़मल को बड़ा समझना है और ख़ुद पसन्दी की ज़िद (यानी उलट) एह़सान को याद करना है और वोह यूं कि बन्दा समझे येह अ़मल अल्लाह पाक की तौफ़ीक़ से हुवा है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 166-167)

﴾19﴿ क्या येह खुला नुक़्सान नहीं ?

अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ (پ28، الطلاق:12)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह है जिस ने सात आस्मान बनाए और उन्ही के बराबर ज़मीनें हुक्म उन के दरमियान उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

यहां अल्लाह पाक गोया येह इरशाद फ़रमा रहा है : आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है मैं ने बनाया है और उस में मेरी कारीगरी के बेहतरीन और उ़म्दा नमूने हैं और मैं ने तेरे देखने को काफ़ी जान लिया है ताकि तू जान ले कि मैं क़ादिर (यानी क़ुदरत रखने वाला) भी हूं और आ़लिम (यानी जानने वाला) भी, जब कि तेरी ह़ालत येह है कि कोताहियों और ऐ़बों से भरपूर सिर्फ़ दो रक्अ़त पढ़ता है मगर तू उस को काफ़ी नहीं समझता कि मैं तुझे देख रहा हूं, तेरे अ़मल को जानता हूं, तेरी तारीफ़ करता हूं और तेरा अ़मल क़बूल करता हूं बल्कि तू चाहता है कि लोग तेरा अ़मल जानें और उस की वजह से तेरी तारीफ़ करें, क्या येह वफ़ादारी है ? क्या येह अ़क़्लमन्दी है ? क्या कोई अ़क़्लमन्द इसे अपने लिए पसन्द करता है ? अफ़सोस है तुझ पर ! क्या तू ना समझ है ?

अगर किसी शख़्स के पास कोई क़ीमती पत्थर हो जिसे बेच कर वोह एक लाख दीनार ह़ासिल कर सकता हो मगर वोह उसे एक पैसे का बेच दे तो क्या येह बहुत बड़ी बेवुक़ूफ़ी और बड़ा नुक़्सान नहीं ? ज़रूर उस की कम अ़क़्ली का सुबूत है। यूंही अल्लाह पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी और सवाब के मुक़ाबले में बन्दे का लोगों की जानिब से तारीफ़ का ख़्वाहिशमन्द होना लाखों दराहिम बल्कि दुनिया

व माफ़ीहा के मुक़ाबले में एक पैसे के घटिया होने से भी ज़ियादा घटिया है। क्या येह खुला नुक़्सान नहीं कि तुम ऐसी ह़क़ीर तारीफ़ों के बदले अल्लाह पाक की बारगाह से मिलने वाली नायाब इ़ज़्ज़तो करामत से ख़ुद को मह़रूम कर दो।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 169)

﴾20﴿ लोग किसी चीज़ के मालिक नहीं

जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद है वोह उस के ख़ौफ़ से ख़ालिस अ़मल करता है। और लोग किसी चीज़ के मालिक नहीं हैं फिर तू उन के लिए बेकार का दिखावा क्यूं करता है ? (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 171)

﴾21﴿ बुरा और जाहिल इन्सान

तुम्हारी ह़ैसिय्यत येह है कि अगर तुम अपने शहर के सरदार (किसी बड़े ऑफ़ीसर के ऑफ़िस में मुलाक़ात के लिए) दाख़िले की इजाज़त मांगो तो वोह अक्सर तुम्हें इजाज़त नहीं देता, अगर अपने मह़ल्ले के किसी बड़े शख़्स (मसलन एम पी और एम एल ए वग़ैरा) से बात करना चाहो तो अक्सर वोह तुम से बात नहीं करता और अगर तुम अपने बादशाह को सज्दा भी कर दो तब भी अक्सर वोह तुम्हारी त़रफ़ तवज्जोह नहीं करता। जब कि अल्लाह पाक ने तुम्हें इजाज़त दे रखी है कि तुम उस की इ़बादत करो, उस की तारीफ़ करो, उस से बात करो बल्कि खुल कर अपनी परेशानी उस पर पेश करो, अपनी ज़रूरतें उस से त़लब करो और अपने सख़्त मुआ़मलात में उस की मदद चाहो। फिर येह कि वोह तुम्हारी कोताही के साथ अदा की गई दो रकअ़त नमाज़ से भी राज़ी हो जाता है बल्कि उन पर इस क़दर सवाब अ़त़ा फ़रमाता है कि कोई इन्सान सोच भी नहीं सकता मगर फिर भी तुम अपनी इन दो रक्अ़तों पर ख़ुद पसन्दी में मुब्तला हो, उन को बहुत कुछ समझते हो और इस मुआ़मले में अल्लाह पाक के एह़सान पर नज़र

नहीं रखते तो तुम कितने बुरे ख़ादिम और कैसे जाहिल इन्सान हो ? और अल्लाह पाक ही से मदद की दरख़्वास्त है और उसी की बारगाह में इस जाहिल नफ़्स की शिकायत है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 174)

﴾22﴿ अल्लाह पाक के लिए ख़ालिस दो रक्अ़त

जब रात में तुम दो रक्अ़तें पढ़ने खड़े हो तो तसव्वुर करो कि उस रात में अल्लाह पाक की इ़बादत के लिए कितने ही ख़ुद्दाम ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशों, जंगलों, समुन्दरों, पहाड़ों और शहरों में खड़े हैं उन में इस्तिक़ामत वाले, सिद्दीक़ीन, ख़ौफ़े ख़ुदा वाले, दीदारे इलाही का शौक़ रखने वाले, रियाज़त व मुजाहदा करने वाले, आ़जिज़ी करने वाले और दुनिया से बे रग़बत लोग शामिल हैं। ग़ौर करो कि उस वक़्त बारगाहे ख़ुदावन्दी में ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ती जानों, पाक बदनों, रोने वाली आंखों, आबाद दिलों, पाक सीनों और साफ़ सुथरे आज़ा से किस क़दर साफ़ सुथरी और ख़ालिस इ़बादत व बन्दगी पेश हो रही होगी और रही तुम्हारी नमाज़ तो अगर्चे तुम ने उस को अच्छी त़रह़ अदा करने में इख़्लास व पुख़्तगी के साथ अपनी त़ाक़त भर कोशिश की होगी लेकिन फिर भी उस शहंशाहे आज़म (अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त) की बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहां है और उन इ़बादात के मुक़ाबले में इस की क्या ह़ैसिय्यत है जो वहां पेश हो रही हैं, बदन गुनाहों से आलूदा व नापाक था, ज़बान फ़ुज़ूल और गुनाह भरी बातों से लिथड़ी हुई थी फिर ऐसी नमाज़ उस की आ़लीशान बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहां थी और इस में कहां येह सलाह़िय्यत थी कि इसे रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में नज़्र किया जाए ? (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 175)

﴾23﴿ क्या कभी ऐसी कोशिश की ?

(इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि) हमारे शैख़ ने फ़रमाया : ऐ

नादान ! ग़ौर कर ! क्या तू ने कभी अपनी कोई नमाज़ आस्मान की त़रफ़ भेजने में ऐसी कोशिश की जैसी तू अमीरों के घर खाना भेजने में करता है ?

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 175)

﴾24﴿ सरापा ख़त़ा हूं निगाहे करम हो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इन्तिहाई मज़बूती और ख़ूबसूरती से एक कपड़ा बुन कर तय्यार किया, फिर उसे उठा कर बाज़ार ले गए और एक कपड़ा बेचने वाले को दिखाया मगर उस ने क़ीमत बहुत थोड़ी लगाई और कहा : इस में तो येह येह ऐब हैं। आप ने कपड़ा लिया और बैठ कर बहुत ज़ियादा रोए, दुकानदार को अपने किए पर शर्मिन्दगी हुई, उस ने माज़ेरत की और आप की मुंह मांगी क़ीमत पर कपड़ा लेने के लिए तय्यार हो गया। आप ने फ़रमाया : बात वोह नहीं जो तुम समझ रहे हो, येह मेरा पेशा है और मैं ने इस कपड़े को तय्यार करते हुए इस की ख़ूबसूरती और मज़बूती में अपनी तमाम तर कोशिश सर्फ़ कर दी ह़त्ता कि इस में कोई ऐब नज़र न आया फिर जब मैं ने इसे उ़यूब को जानने वाले माहिर पर पेश किया तो उस ने इस में वोह ऐब बताए जिन से मैं ग़ाफ़िल था तो फिर कल जब रब्बुल आ़लमीन के सामने हमारे आमाल पेश किए जाएंगे तो उन में किस क़दर ऐब और कोताहियां ज़ाहिर होंगी जिन से आज हम बे ख़बर हैं।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 176-177)

﴾25﴿ मक़्बूल अ़मल का सवाब

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा गया : फ़ुलां फ़ुलां अ़मल का सवाब कितना है ? आप ने फ़रमाया : अ़मल जब क़बूल हो जाए तो उस का सवाब शुमार नहीं किया जा सकता।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 177)

﴾26﴿ राबिअ़ा बसरिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का इ़ख़्लास

ह़ज़रते बीबी राबिअ़ा बसरिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : मेरा जो भी अ़मल ज़ाहिर हो जाए मैं उसे किसी गिनती में नहीं लाती।

(मिन्हाजुल अ़ाबिदीन, स. 180)

﴾27﴿ नफ़्स को इ़बादत की अ़ादत डालिए

ह़ज़रते उस्ताद अबुल फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे : मैं जानता हूं कि मेरी इ़बादात मक़्बूल नहीं। आप से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया : मैं जानता हूं कि मक़्बूल होने के लिए अ़मल किन चीज़ों का मोह़ताज है और येह भी ख़बर है कि मैं इन चीज़ों को अदा नहीं कर पाता तो यूं मुझे पता है कि मेरी इ़बादात मक़्बूल नहीं। अ़र्ज़ की गई : तो फिर आप इ़बादात क्यूं करते हैं ? इरशाद फ़रमाया : इस उम्मीद पर कि किसी दिन अल्लाह पाक मेरी इस्लाह़ फ़रमा दे तो नफ़्स नेकी का आ़दी बन चुका हो और फिर मुझे नफ़्स को इ़बादत की त़रफ़ फेरना न पड़े। येह ह़ाल उन लोगों का है जो इ़बादात में सख़्त मेह़नत व मशक़्क़त करने वाले थे।

(मिन्हाजुल अ़ाबिदीन, स. 180)

﴾28﴿ सब से बड़ा तोह़फ़ा

इ़बादत से फ़राग़त के वक़्त दिल में इस (यानी तौफ़ीक़े इलाही और एह़सान) की तकरार करोगे और अल्लाह पाक से मदद मांगोगे तो येह त़रीक़ा तुम्हें रियाकारी और ख़ुद पसन्दी से दूर कर देगा, तुम्हें ख़ालिस अल्लाह पाक के लिए इ़बादत करने पर उभारेगा और तमाम ह़ालात में तुम पर अल्लाह पाक के एह़सान को याद करने में लगाए रखेगा। यूं तुम्हें ऐसी मक़्बूल इ़बादतें नसीब होंगी जिन में कोई ख़राबी न हो और बिलफ़र्ज़ अगर ऐसी इ़बादत ज़िन्दगी में एक ही दफ़ा ह़ासिल हो और फिर कभी मुयस्सर न आए तो बिलाशुबा अस्ल में येही बड़ी इ़बादत है

मुझे क़सम है ! अगर्चे ऐसी इ़बादात की तादाद कम हो मगर इन की क़द्रो क़ीमत बहुत बड़ी और नफ़ा बहुत ज़ियादा और अन्जाम बहुत अच्छा है। ऐसी तौफ़ीक़ बहुत कम मिलती है और उस चीज़ के साथ बन्दे पर अल्लाह पाक का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है। अब बताओ कि "**इस तोह़फ़े से बड़ा तोह़फ़ा कौन सा हो सकता है जिसे तमाम जहानों का रब क़बूल फ़रमा ले।**" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 186)

﴾29﴿ शुक्र क्या है ?

बन्दे की त़रफ़ से शुक्र ऐसी ताज़ीम है जो उसे अपने साथ एह़सान करने वाले से बे अदबी करने से रोक देती है और (बन्दे में) येह कैफ़ियत एह़सान करने वाले के एह़सान को याद करने और नाशुक्री करने वाले की नाशुक्री की वजह से उस के बुरे ह़ाल को याद करने से पैदा होती है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 189)

﴾30﴿ एक दीनी मस्अले की लज़्ज़त

अल्लाह पाक ने जिन लोगों को किसी दीनी नेमत इ़ल्म या अ़मल के साथ ख़ास किया ह़क़ीक़त में वोही लोग इस नेमत की क़दरो क़ीमत को ज़ियादा जानने वाले, उस की ज़ियादा ताज़ीम करने वाले, और सब से ज़ियादा उस का शुक्र अदा करने वाले होंगे बाज़ को अल्लाह पाक ने इस से मह़रूम रखा तो येह उन्हें तक़्दीर के मुत़ाबिक़ नेमत से उन की बे परवाई और ताज़ीम में कोताही की वजह से मह़रूम रखा है फिर अगर इ़ल्म व इ़बादत की ताज़ीम अ़वाम और बाज़ारी लोगों के दिलों में भी वैसी ही होती जैसी कि उ़लमा और इ़बादत गुज़ारों के दिलों में है तो वोह कभी बाज़ारों को तरजीह़ न देते बल्कि बाज़ारों को छोड़ना उन पर आसान हो जाता। क्या तुम देखते नहीं कि जब कोई फ़क़ीह (आ़लिम) किसी ऐसे मस्अले को वाज़ेह़ कर लेता है जो पहले उस पर वाज़ेह़ नहीं था तो उस का दिल

कैसे ख़ुशी से झूम उठता है और सुरूर कितना बढ़ जाता है, उस के दिल में उस की क़द्रो मन्ज़िलत इतनी बढ़ जाती है कि अगर उसे लाखों दीनार भी दिए जाते तो वोह इतना ख़ुश न होता। बाज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि फ़क़ीह को कोई दीनी मस्अला अटक जाता है तो वोह साल भर बल्कि 10 साल तक बल्कि 20 साल तक उस में ग़ौरो फ़िक्र करता रहता है मगर फिर भी उकताता नहीं ह़त्ता कि अल्लाह पाक उसे इस की समझ अ़ता फ़रमा देता है तो वोह उसे अल्लाह पाक का बहुत बड़ा एह़सान और अ़ज़ीम नेमत समझता है और उस पर ख़ुद को दौलतमन्दों से बढ़ कर दौलतमन्द और इ़ज़्ज़तदारों से बढ़ कर इ़ज़्ज़तदार समझता है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 193)

﴾31﴿ नेमत को बाक़ी रखने का त़रीक़ा

तुम जब भी भलाई से मह़रूम होते हो अपने नफ़्स ही की वजह से होते हो लिहाज़ा ख़ूब कोशिश करो ताकि अल्लाह पाक की नेमत की क़दर पहचानो और कमा ह़क़्क़ुहू उस की ताज़ीम करो फिर तुम उस (यानी नेमत) के अहल हो जाओगे और फिर रब तआ़ला नेमत को तुम्हारे पास बाक़ी रख कर तुम पर एह़सान फ़रमाएगा। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 194)

﴾32﴿ नेमत की क़दर न करने वाले का ह़ाल

वोह बादशाह जो अपने किसी ग़ुलाम को इ़ज़्ज़त दे, उसे ख़ास कपड़े पहनाए, अपना क़ुर्ब (यानी नज़्दीकी) बख़्शे और उसे अपने तमाम ख़ादिमों का सरदार बना दे फिर उसे अपने दरवाज़े पर मौजूद रहने का हुक्म दे और दूसरी त़रफ़ येह फ़रमान जारी करे कि इस के लिए फ़ुलां जगह मह़ल तामीर किए जाएं, बुलन्द तख़्त बिछाए जाएं, त़रह़ त़रह़ के खाने सजाए जाएं, उस के लिए ख़ुद्दाम हाथ बांधे

खड़े रहें यहां तक कि जब वोह बादशाह की ख़िदमत से वापस लौटे तो उसे उन महल्लात में इज़्ज़त के साथ बादशाह की हैसिय्यत से ठहराया जाए।

अब बादशाह की ख़िदमत और अपने बादशाह बनने के दरमियान दिन की एक घड़ी या इस से भी कम वक़्त रहता हो और इसी दौरान येह ग़ुलाम बादशाह के दरवाज़े पर जानवरों की देखभाल करने वाले किसी नौकर को रोटी का टुकड़ा खाते या किसी कुत्ते को हड्डी चबाते हुए देखे तो बादशाह की ख़िदमत को छोड़ कर उन को देखने में मश्ग़ूल हो जाए और शाही इन्आ़मात की त़रफ़ से तवज्जोह हटा कर रोटी खाने वाले नौकर की त़रफ़ दौड़े और अपना हाथ फैला कर उस से रोटी का टुकड़ा मांगने लगे या हड्डी के लिए कुत्ते से लड़ने लगे और उन पर रश्क करते हुए उन की इस ह़ालत को बड़ा समझने लगे तो क्या बादशाह जब उस आदमी को इस ह़ालत में देखेगा तो येह न कहेगा कि इस बेवुक़ूफ़ और कमीने शख़्स ने हमारी दी हुई इज़्ज़त का ह़क़ न पहचाना और हम ने इसे जो क़ीमती लिबास अ़त़ा फ़रमाया, अपनी बारगाह में क़ुर्ब दिया, इस पर अपनी ख़ास नज़रे इनायत की और इस के लिए दौलत के ज़ख़ीरे और कई क़िस्म की नेमतें मुहय्या कीं इस ने उन की क़द्रो क़ीमत को समझा ही नहीं, येह तो बड़ा जाहिल है और इसे चीज़ों के दरमियान तमीज़ ही नहीं, इस से तमाम इन्आ़मो इकराम छीन लो और इसे हमारे दरवाज़े से दूर कर दो तो येही ह़ाल दुनिया की त़रफ़ माइल और ख़्वाहिश की पैरवी करने वाले इ़बादत गुज़ार का होता है ह़ालांकि अल्लाह पाक ने उसे इ़बादत, नेमतों की पहचान, शरीअ़त और अ़हकाम की पहचान से नवाज़ा मगर वोह उन की क़द्रो क़ीमत नहीं पहचानता। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 195)

﴾33﴿ दुनिया का माल मुसीबत है

दुनिया का माल तो एक मुसीबत है जिस में अल्लाह पाक हर ग़ैर मुस्लिम,

फ़िरऔन, बे दीन और जाहिल व फ़ासिक़ को मुब्तला करता है जो कि उस की ज़लील तरीन मख़्लूक़ हैं और वोह इस घटिया दुनिया को हर नबी, सिद्दीक़ और आ़लिम व आ़बिद से दूर रखता है जो कि उस की बेहतरीन मख़्लूक़ हैं और बाज़ औक़ात तो उन्हें रोटी का टुकड़ा और कपड़े का चीथड़ा भी नसीब नहीं होता और अल्लाह पाक उन्हें एहसान जताता है कि उस ने उन्हें दुनिया की गन्दगी से आलूदा नहीं फ़रमाया। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 197)

वज़ाहत ! ह़ज़रते अबू सफ़्वान रुऐनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : अल्लाह पाक ने जिस दुनिया की क़ुरआने करीम में मज़म्मत बयान फ़रमाई है इस से मुराद क्या है ? इरशाद फ़रमाया : हर वोह काम जो तू दुनिया में दुनिया की ख़ातिर करे वोह मज़्मूम (यानी बुरा) है और हर वोह काम जिस से आख़िरत (यानी सवाब) मुराद हो वोह दुनिया नहीं। (قوت القلوب، 444/1)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : बाज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के पास माल था लेकिन उन का मक़्सद सुवाल से बचना और राहे ख़ुदा में ख़र्च करना था। (احیاء العلوم، 328/3) जब बन्दा आख़िरत की बेहतरी की ग़रज़ से दुनिया में से कुछ लेगा तो उसे दुनियादार नहीं कहेंगे बल्कि उस के ह़क़ में दुनिया आख़िरत की खेती होगी। (احیاء العلوم، 272/3) लिहाज़ा ह़ज़रते दाऊद व सुलैमान عَلَيْهِمَا السَّلَام की बादशाहत और बाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के मालदार होने की वजह से उन पर एतिराज़ नहीं किया जा सकता।

﴾34﴿ अपनों से ऐ़श व आराम की दूरी

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा और ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام से फ़रमाया : अगर मैं चाहूं तो तुम्हें ऐसी ज़ीनत दूं जिसे देख कर फ़िरऔन जान ले कि ऐसी ज़ीनत उस की ता़क़त से बाहर है और मैं ज़रूर ऐसा कर सकता

हूं मगर मैं तुम दोनों से दुनिया दूर कर के तुम्हें उस से बे परवा कर दूंगा और मैं अपने दोस्तों के साथ ऐसा ही करता हूं, मैं उन्हें दुनियावी नेमतों से ऐसे ही दूर रखता हूं जैसे मेहरबान चरवाहा अपने ऊंटों को ख़ारिश ज़दा ऊंटों से दूर रखता है। मैं उन्हें दुनिया के ऐशो आराम से इस लिए दूर नहीं रखता कि उन की मेरे नज़्दीक कोई अहमिय्यत नहीं बल्कि इस लिए कि वोह मेरी जानिब से इ़ज़्ज़त व इन्आ़म को पूरे त़ौर पर ह़ासिल करें। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 197)

﴾35﴿ बहुत बड़ी नेमत

एक मरतबा रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को येह कहते सुना : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى الْاِسْلَام यानी सब तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिए कि उस ने इस्लाम अ़त़ा फ़रमाया। तो इरशाद फ़रमाया : बेशक तुम बहुत बड़ी नेमत पर अल्लाह पाक की तारीफ़ व ह़म्द कर रहे हो।"

(شعب الایمان، 4/119، حدیث:4498) (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 198)

﴾36﴿ अदाए शुक्र में बेहतरीन कलिमा

मन्क़ूल है कि अदाए शुक्र में अल्लाह पाक को सब से प्यारा और बेहतरीन कलिमा येह है कि बन्दा यूं कहे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْعَمَ عَلَيْنَا وَهَدَانَا اِلٰى دِيْنِ الْاِسْلَام यानी तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह पाक के लिए हैं जिस ने हम पर इन्आ़म फ़रमाया और हमें दीने इस्लाम की हिदायत बख़्शी। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 198)

﴾37﴿ दीन की क़दर करें

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे : जो अपने दीन पर बे ख़ौफ़ होगा उस से दीन छीन लिया जाएगा। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 198)

﴾38﴿ ह़िफ़ाज़ते ईमान की दुआ़

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाया करते : तुम कैसे बे ख़ौफ़ हो सकते हो ह़ालांकि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने

अपने रब की बारगाह में (निहायत आ़जिज़ी व इन्किसार के लिए) दुआ की और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ की : ﴿تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا﴾ (پ13، یوسف: 101) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुझे मुसलमान उठा।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमेशा येह दुआ करते थे : "اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ यानी ऐ अल्लाह पाक ! सलामती अ़ता फ़रमा, सलामती अ़ता फ़रमा।" ऐसा लगता गोया आप कश्ती में हैं और डूबने का ख़ौफ़ है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 199)

﴾39﴿ कहीं इस्लाम न छिन जाए !

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ बिन इस्बात़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को पूरी रात रोते देखा तो अ़र्ज़ की : आप गुनाहों पर इस क़दर रोते हैं ? उन्हों ने एक तिन्का उठाया और फ़रमाया : गुनाह तो अल्लाह पाक के नज़्दीक इस तिन्के से भी ज़ियादा मामूली हैं, मैं तो इस बात पर रो रहा हूं कि कहीं अल्लाह पाक मुझ से इस्लाम न छीन ले। اَلْعِيَاذُ بِالله (अल्लाह पाक की पनाह।) (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 199)

﴾40﴿ नाशुक्री ले डूबी

एक आ़रिफ़ बिल्लाह (यानी अल्लाह पाक की पहचान रखने वाले) बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह पाक से बल्अ़म बिन बाऊ़रा के बारे में पूछा कि वोह इतनी इ़ज़्ज़तो शान के बाद कैसे मर्दूद हो गया ? तो अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : जो कुछ मैं ने उसे दिया था उस पर उस ने एक दिन भी मेरा शुक्र अदा नहीं किया, अगर वोह एक मरतबा भी मेरा शुक्र अदा कर लेता तो मैं उस से अपनी अ़ताएं न वापस लेता। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 199)

﴾41﴿ एक साल में मरतबए कमाल

ह़ज़रते बीबी राबिआ़ बसरिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا बड़ी उ़म्र की कनीज़ (यानी

ख़ादिमा) थीं, उन्हें बसरा के बाज़ार में घुमाया जाता था मगर उम्र ज़ियादा होने की वजह से कोई भी ख़रीदने में दिलचस्पी नहीं लेता था। फिर एक ताजिर को इन पर रहम आया और उस ने इन्हें सौ दिरहम में ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने राहे आख़िरत इख़्तियार कर ली (यानी दिन रात इबादत में मसरूफ़ रहतीं) अभी एक साल भी न गुज़रा था कि उन के मक़ामो मर्तबे की बुलन्दी की वजह से बसरा के उलमा व मशाइख़ में इन की शोहरत हो गई।

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 203)

﴾42﴿ तमन्नाए फ़ारूक़ी

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُ ने किसी से येह आयते मुबारका सुनी : ﴿هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِیْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ یَكُنْ شَیْـًٔا مَّذْكُوْرًا۝۱﴾ (پ29، الدّھر:1) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक आदमी पर एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं उस का नाम भी न था।" तो इरशाद फ़रमाया : काश ! येह हालत ऐसी ही रहती (इन्सान पैदा होता न पाबन्दियों में आता)। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 205)

﴾43﴿ आदमी नादान है

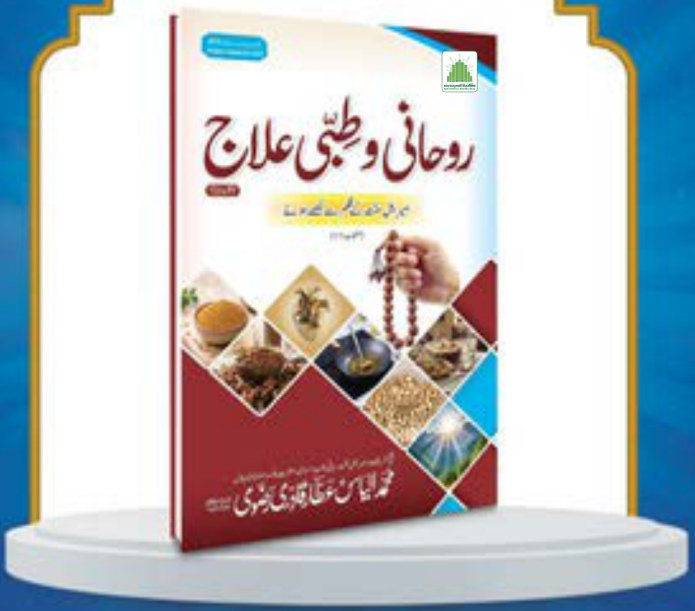
हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : आदमी को नादान पैदा किया गया है अगर आदमी में नादानी न होती तो कभी ज़िन्दगी से लुत्फ़ अन्दोज़ न होता। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 205)

﴾44﴿ क़ाबिले रश्क कौन ?

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता, क्या येह लोग क़ियामत की हौलनाकियां नहीं देखेंगे ? मुझे तो उस पर रश्क आता है जो पैदा ही न हुवा।

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 205)

अगले हफ़्ते का रिसाला



DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025